नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :02.01.2020

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, में आज श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत **डॉ. राहुल मिश्रा** ने बताया कि गुरु गोविन्द सिंह सिखों के दसवें धार्मिक गुरु थे। वे एक गुरु ही नही अपितु एक महान दार्शनिक, प्रख्यात कवि व लेखक, निडर एवं निर्भिक योद्धा और संगीत के मर्मज्ञ थे। उनका जन्म 1666 ई. में बिहार के पटना शहर में हुआ था जो आज **"तख्त श्री पटना हरिमंदर साहिब"** के नाम से जग विख्यात हुए। गुरु गोविन्द सिंह जी नवें सिख धर्मगुरु, गुरुतेग बहादुर के इकलौती संतान थे। औरंगजेब द्वारा पिता की हत्या किये जाने के पश्चात् 1676 में गुरु गोविन्द सिंह को औपचारिक रूप से सिखों का दसवां गुरु बनाया गया और वे अन्तिम सिख गुरु कहलाये। उन्होंने 1699 में बैशाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की जो सिख धर्म की इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना के तौर पर अंकित है। गुरु गोविन्द सिंह जी ने कई बड़े सिख गुरूओं के महान उपदेशों को सिखों के पवित्र ग्रंथ **"गुरु ग्रंथ साहिब"** में संकलित करके इस ग्रंथ को पूर्ण किया। बाद में गुरु गोविन्द सिंह जी ने ही सिख धर्म में गुरुओं के उत्तराधिकारियों की परम्परा को समाप्त किया और सिखों के लिए गुरु ग्रंथ साहिब को ही सबसे पवित्र तथा गुरु का ही प्रतीक बनाया उन्होंने अपने जीवन काल में मुगलों से कई लड़ाईयां लड़ी जिनमें चमकौर का युद्ध विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसमें गुरु जी के साथ मात्र चालीस सिखों ने मिलकर दस लाख के मुगल फौज को युद्ध में धुल चटाई। गुरु गोविन्द सिंह का सम्पूर्ण जीवन त्याग, समर्पण और बलिदान से परिपूर्ण रहा। आज भी उनके अनुयायी उनके द्वारा बताये गये उपदेशों का अनुसरण करते है और उनके हृदय में अपने गुरु के प्रति अपार प्रेम, श्रद्धा व सम्मान है। यह महाविद्यालय परिवार ऐसे महान और पूजनीय गुरु के चरणों में नमन करता है।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकार